

भारत और नेपाल की नई यात्रा: रक्सौल-काठमांडू रेल लकि

संदर्भ

हाल ही में प्रधान नरेंद्र मोदी द्वारा नेपाल यात्रा के दौरान उन वादों को लेकर प्रतबिद्धता जताई गई है, जो उन्होंने नेपाली प्रधान मंत्री ओली की हालिया भारत यात्रा के दौरान प्रस्तावित किये थे। ध्यातव्य है कि इस प्रतबिद्धता में कृषि, रेलवे संबंध और अंतरदेशीय जलमार्ग विकास सहित द्विपक्षीय पहलों को प्रभावी ढंग से लागू करने का संकल्प शामिल था। भारत-नेपाल के संयुक्त बयान के रूप में भारत की 'नेबरहुड फ्रस्ट' नीतिकी मजबूती हेतु दोनों पक्षों ने विशेष रूप से "कनेक्टिविटी की उत्प्रेरक भूमिका" पर जोर दिया है। इस संदर्भ में भारत-नेपाल रेल संबंध का महत्त्व और व्यापक हो जाता है।

प्रमुख बिंदु

- समयबद्ध द्विपक्षीय रेल कनेक्टिविटी परियोजनाओं के लिये दोनों प्रधानमंत्रियों की वचनबद्धता वास्तव में एक परिवर्तनकारी नरिणय है।
- इस नरिणय के तहत भारत बहिर के रक्सौल और नेपाल में काठमांडू के बीच सामरिक रेलवे लकि का नरिमाण करेगा, ताकि लोगों के बीच संपर्क तथा माल के थोक आवागमन को सुवधाजनक बनाया जा सके।
- इसके अलावा, यह सुनश्चिति कथिा जाएगा कि पहले चरण के तहत सीमा पार रेल लाइन (जयनगर-जनकपुर/कुरुथा और जोगबानी-बरिटनगर) का कार्य वर्ष 2018 में पूरा हो जाए।
- दोनों देशों के प्रधानमंत्रियों ने नई वदियुतीकृत रेल लाइन का नरिमाण करने पर सहमत वियकृत की है, जसिं भारत द्वारा वतितपोषति कथिा जाएगा।
- इसके साथ ही आगामी 3 अन्य रेलवे परियोजनाओं में न्यू जलपाईगुडी-ककारभीता, नौतनवा-भैरहावा और नेपालगंज रोड-नेपालगंज शामिल हैं।
- इस परियोजना के पूरा होने से देश के सीमावर्ती कषेत्रों का नेपाल की राजधानी से सीधा संपर्क को जाएगा।
- सीमा पार कनेक्टिविटी दोनों देशों में लोगों से लोगों के संबंधों को बढ़ाने और आर्थिक विकास को बढ़ावा देने के लिये एक महत्त्वपूर्ण कारक है।

भारत हेतु महत्त्वपूर्ण कथों?

- भौगोलिक स्थिति के अनुरूप, भारत दक्षिण एशिया में केंद्रीय स्थिति रिखता है, जसिमें कषेत्रफल की दृष्टि से 51 प्रतशित, आबादी का 71 प्रतशित और जीडीपी का 40 प्रतशित हसिसा शामिल है।
- भारत के अधिकांश पड़ोसी देश न केवल भारत के साथ सीमाओं को साझा करते हैं, बल्कि अधिकांश मामलों में ये देश चीन के साथ भी सीमाएँ साझा करते हैं।
- साथ ही, महत्त्वपूर्ण पहलू यह भी है कि ये देश कषेत्रीय व्यापक कनेक्टिविटी के लिये भारत पर नरिभर करते हैं।
- अतः यह भारत की ज़मिमेदारी है कि वह कषेत्रीय एकीकरण की प्रक्रथिा को आगे बढ़ाने हेतु आवश्यक कदम बढाए।
- भारत के चारों तरफ चीन पाँच सार्क देशों के साथ भूमि सीमाओं को साझा करता है और खुद छठे स्थान पर चकिन नैक पर अवस्थति है तथा म्याँमार के साथ लंबी सीमा साझा करता है।
- इसके साथ ही चीन ने नेपाल और पाकसितान को झजियिंग और तबिबत में अपनी सुरक्षा और कषेत्रीय अखंडता के लिये महत्त्वपूर्ण माना है।
- इन्ही मामलों को देखते हुए चीन श्रीलंका, म्याँमार, पाकसितान और बांग्लादेश में 'स्ट्रगि ऑफ़ परल्स' के तहत सड़क और रेल लकि का एक जाल बनाने में व्यस्त है।
- अतः यह स्पष्ट है कि चीन दक्षिण एशियाई कषेत्र में, न केवल भारत का सबसे बड़ा प्रतदिवंदवी है, बल्कि समय-समय पर भारत के पड़ोसी देशों को विकास का प्रलोभन देकर इसकी संप्रभुता के लिये भी एक बड़ा खतरा बना हुआ है।
- हालाँकि, भारत ने दोनों देशों और नेपाल को जोड़ने वाले अंतर-हमिलयी आर्थिक गलियारे के नरिमाण के लिये चीन के प्रस्ताव पर एक कठोर प्रतकिरथिा व्यकृत की है, कथोंकि सरकार आधारभूत संरचना और कनेक्टिविटी परियोजनाओं पर नेपाल के साथ द्विपक्षीय रूप से काम करने की इच्छुक है।
- इसलिये हाल ही में वुहान शखिर सम्मेलन में प्रधान मंत्री मोदी और चीनी राष्ट्रपति शी जनिपगि के बीच इस परियोजना का जकिर भी कथिा गया।

आगे की राह

- कुछ समय से चीन ने नेपाल, श्रीलंका, बांग्लादेश और मालदीव में अपनी सक्रथिता बढ़ाई है, अतः भारत को पड़ोसी देशों के साथ अपनी वदिश नीतिपर पुनर्वचिार करने की आवश्यकता है।
- गौरतलब है कि म्याँमार भारत के साथ भूमि सीमा साझा करने वाला एकमात्र आसयान देश है। लंबे समय तक, भारत ने म्याँमार के अराकान तट पर सड़क और रेल कनेक्शन तथा एक नए बंदरगाह के नरिमाण की बात की थी, लेकिन अपने वादों की पूर्तिके लिये कोई ऊर्जावान कदम अभी तक नहीं उठाया है।

- देखा भी गया है कि भारत उच्चतम स्तर पर भी किये गये वादों पर समयबद्ध पहुँच सुनिश्चित करने में असफल साबित हुआ है ।
- इस प्रकार के वादों की देरी से भारत अपने पड़ोसी देशों के साथ संबंधों को बगिड़ा रहा है और उधर इस स्थितिका फायदा उठाते हुए चीन भारत को घेरने का प्रयास कर रहा है ।
- भारत ने रक्सौल-काठमांडू रेल लकी के नरिमाण हेतु एक सराहनीय पहल की है, कतिु अब आवश्यकता है कि इस अवसर के माध्यम से अपने पड़ोसियों के बीच रकिॉर्ड समय में परयोजना को पूरा करने की तत्परता भी दिखाए । क्यॉकि विकास परयोजनाओं के माध्यम चीन भारत के पड़ोसी देशों में पहुँच स्थापति कर भारत की संप्रभुता को चुनौती देने का कोई भी अवसर नहीं छोड़ना चाहता ।

PDF Referenece URL: <https://www.drishtias.com/hindi/printpdf/a-new-journey-for-india-and-nepal>

